या तो प्रकृति के सौम्य रूप का ही वर्णन करती है अथवा उसके रौद्र रूप का किन्तु वाण ने प्रकृति के उभय पक्ष का सफल वर्णन किया है। प्रकृति के इन दृश्यों को साकार रूप देने के लिए कवि ने उपमा उत्प्रेक्षादि अलंकारों का सहारा लिया है। विन्ध्याटवी के भयावह स्वरूप का चित्रण बड़ा ही रोमाञ्चकारी है जिसका एक उदाहरण देखिये — "नखमुखलग्नेभकुम्भमुक्ताफलप्रलुब्धः शबरसेनापतिभिः अभिहन्यमानकेशरिशता, प्रेताधिपनगरीव सदा सन्निहित-मृत्युभीषणा महिषाधिष्ठिता च, समरोद्यत पताकिनीव-वाणासनारोपित शिलीमुखा विमुक्तासिंहनादा च" इत्यादि

साथ ही जावालि आश्रम के शान्त मनोरम वायुमण्डल का भी परिचय प्राप्त करने योग्य है। देखिये - किस प्रकार आश्रम के अन्धे तापसों को वहाँ के वानर - छड़ी पकड़ाकर ले जा रहे हैं — "परिचितशाखामृग करा - कृष्टयष्टि निष्कास्यमान प्रवेश्यमानजरदन्धतापसम्।"

अच्छोद सरोवर का वर्णन तो कवि की निरीक्षण शक्ति का विलक्षण निदर्शन है। सरोवर के तट पर उगनेवाले - कदम्ब वृक्षों से कूदनेवाले वन्दरों का बड़ा ही स्वाभाविक चित्रण हुआ है — "तटकदम्ब शाखाधिरूढ हरि कृतजलप्रपात क्रीडम्।" सच पूछा जाय तो वाण की कादम्बरी सचमुच एक प्रकार की - चित्रशाला है, जिसमें विभिन्न चित्रों की प्रदर्शनी लगी है। वर्णन की विचित्रता दर्शनीय है। कहीं विन्ध्याटवी का भीषण कलरव और शबरसैन्य का कोलाहल है तो कहीं - आश्रम और उनमें रहनेवाले मुनियों के पावनमङ्गल उप-देश हैं। इसमें केवल एक जन्म की कथा नहीं अपितु तीन - जन्मों की कथा अनुस्यूत है और इसमें प्रदर्शित अनु - राग का स्वरूप केवल लौकिक नहीं वरन् अलौकिक है जो मानव जीवन का परम आनन्दमय रूप है। वाण ने सर्वत्र - विषय के अनुकूल ही वर्णनशैली अपनाई है। वाण ने अपनी गद्यशैली का उल्लेख स्वयं हर्षचरित में किया है —

नवोऽर्थो जातिरग्राम्या श्लेषः स्पष्टः स्फुटो रसः।
विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुर्लभम्॥

Scanned by CamScanner